CITY भास्कर
dainikbhaskar.com

जैम्स नॉलेज . प्राकृतिक पुखराज

बृहस्पति के लिए पुखराज

भारतीय ज्योतिशास्त्र के अनुसार बृहस्पति ग्रह के लिए पहना जाने वाला रत्न पुखराज अंग्रेजी में येलो सफायर के नाम से जाना जाता है। यह पीतमणि, गुरु रत्न एवं पुष्पराज नामों से भी विख्यात है। पुखराज यदि स्वच्छ, स्वर्णिम आभायुक्त एवं पारदर्शक और वजनदार हो तो दुर्लभ श्रेणी का माना जाता है।

प्राकृतिक पुखराज कुरुविंद समूह का ही रत्न है। कुरुविंद समूह के रत्न में लाल रंग उपलब्ध होने पर माणिक्य एवं पीतवर्ण होने पर पुखराज कहलाता है। अतः यह भी भू-गर्भ से ट्राईगोनल सिस्टम में ही मिलता है। इसके क्रिस्टल अधिकांशतः पिरामिडी होते हैं जिन पर चारों ओर आड़ी धारियां अंकित रहती हैं। माणिक्य की भांति यह भी पेबल रूप में पाया जाता है। नदी, तालाब, समुद्र आदि जलस्त्रोतों एवं उसके आस-पास पेबल रूप में मिलने वाले रत्न उच्च श्रेणी के होते हैं।

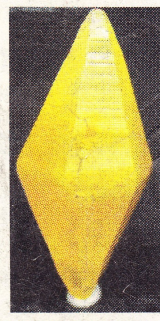

भौतिक एवं प्रकाशीय गुण लगभग माणिक्य के समान ही होते हैं। रंग एवं शोषित वर्णपट्ट (स्पेक्ट्रम) के अलावा कठोरता म्होस स्केल पर 9, उच्च स्पेसिफिक ग्रेविटी (3.98-4.00) एवं उच्च वक्रीभवनांक (1.76-1.) माणिक्य के समान ही है। अतः उच्चकोटि की पूर्ण चमक-दमक पुखराज में विद्यमान रहती है, द्विवर्णता माणिक्य से भंद्विम होती है। डाइक्रोस्कोप से देखने पर ही दो रंग दिखाई देते हैं। माइक्रोस्कोपिक अध्ययन ही इसकी पहचान के सही निर्णय पर पहुंचाता है। इसमें सामान्य तौर से पाए जाने वाले अंतरावेशी (इन्क्लूजन) फिंगर प्रिंट के समान संरचना, नेगेटिव क्रिस्टल्स (रत्न में क्रिस्टल की समान आकृति पाई जाती है), लेकिन वह अन्य खनिज या क्रिस्टल्स न होकर सिर्फ खोखली आकृति ही होती है। अतः कभी-कभी पॉलिश किए हुए पुखराज की सतह पर खड्डेनुमा नेगेटिव क्रिस्टल्स देखे जा सकते हैं।

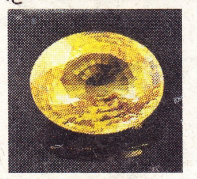

मीनू बृजेश व्यास
सहायक निदेशक, जीटीएल
gtl@gjepcindia.com

यूं तो पुखराज में रुटाइल की सूई समान रचना जिसे सिल्क कहा जाता है, पाया जाता है। किंतु तारांकन प्रभाव पुखराज में सुलभ नहीं है। इसका कारण पुखराज को पोटा रूप (कॅबेशोन) में नहीं काटा जाना है। क्योंकि इसका राशि रत्न के रूप में अधिकाधिक प्रयोग होने के कारण इसको फॅसेटेड ही बनाया जाता है। किंतु छोटे साइज का पुखराज जड़ाऊ आभूषणों में काम लिया जाता है। इसकी मणियां एवं मालाएं भी देखने को मिलती है।

कुरुविंद समूह के रत्न ज्यादातर आग्नेय एवं कायांतरित चट्टानों में पाए जाते हैं। पुखराज भी इन्हीं चट्टानों मे मिलता है। जैम क्वालिटी माणिक्य विश्व के कई भागों में पाया जाता है, किंतु भारत में यह दुर्लभ है। पुखराज का श्रेष्ठ एवं प्रमुख स्रोत तो श्रीलंका ही है, किंतु अन्य स्रोतों में ऑस्ट्रेलिया, थाईलैंड, अफ्रीका में तंजानिया, नाइजीरिया, केन्या मेडागास्कर हैं।